1.

हम

(कविता)

हम प्रभात की नई किरण बन,
नई ज्योति बिखराएँगे।
कण-कण को, तृण-तृण को,
मोती-माणिक-सा चमकाएँगे।

हम तरु-तरु के नए सुमन बन,
उपवन नए सजाएँगे।
नूतन मधु, मकरंद, सुरभि के,
कण सर्वत्र लुटाएँगे।

हम भ्रमरों के नव गुंजन बन,
नूतन स्वर में गाएँगे।
कली-कली का, फूल-फूल का,
आनन, हृदय खिलाएँगे।

हम लहरों की नव उमंग बन,
सरिता नई बहाएँगे।
सिंचित कर मिट्टी का कण-कण,
सोना हम उपजाएँगे।

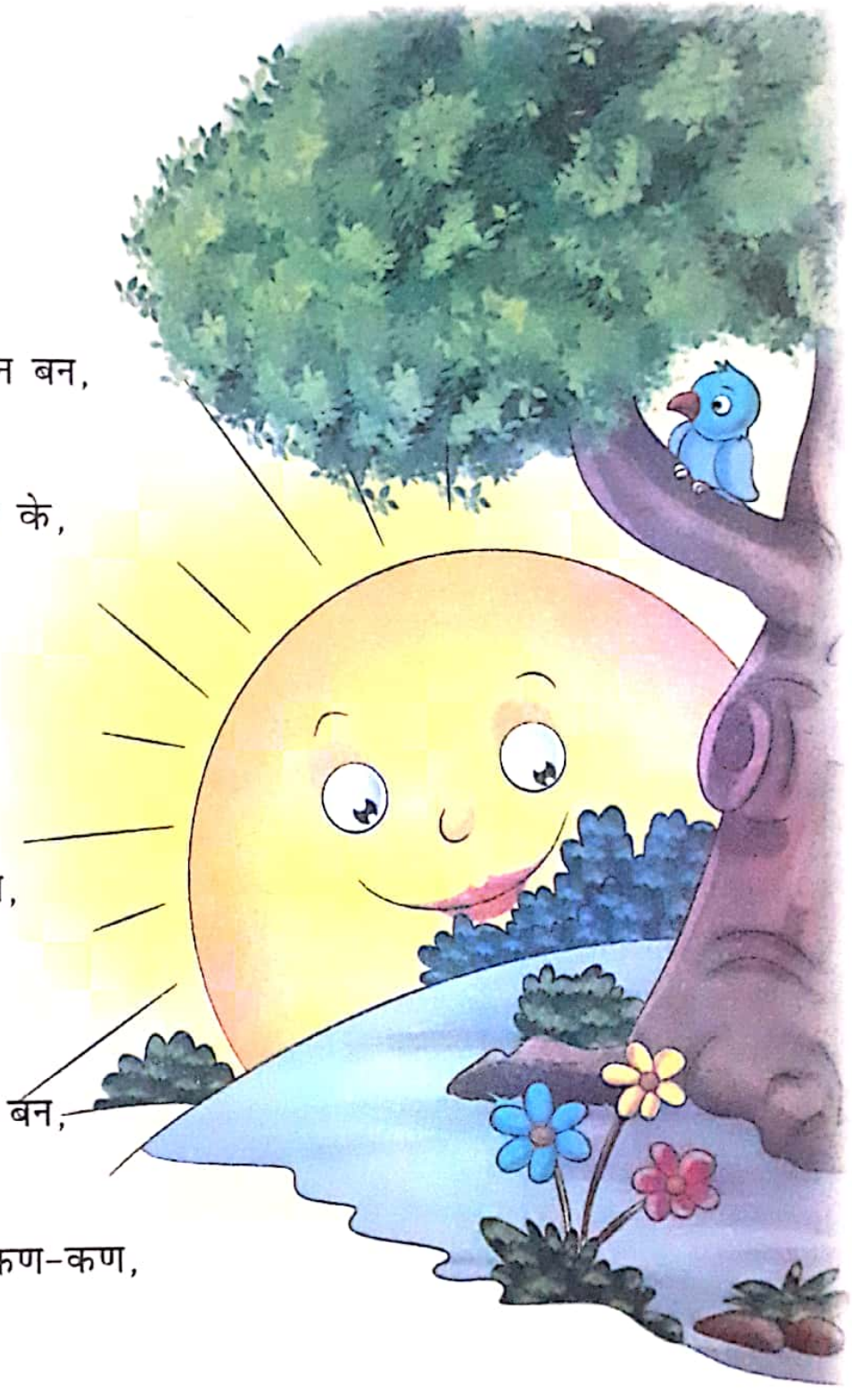

Scanned with CamScanner